IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिंदी पत्रकारिता में भाषा शैली के नैतिक निहितार्थ

रति सुलेगाव
नॉर्थ ईस्ट क्रिश्चियन यूनिवर्सिटी
दीमापुर, नागालैंड

सारांश -

हिंदी पत्रकारिता में भाषा शैली के नैतिक निहितार्थ डिजिटल युग में विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गए हैं, जहाँ प्रिंट और डिजिटल मीडिया की भाषा में अंतर (जैसे, सनसनीखेजता, अतिशयोक्ति, और तथ्यात्मकता से समझौता) पत्रकारिता की विश्वसनीयता, निष्पक्षता, और सामाजिक प्रभाव को प्रभावित करते हैं। यह शोध पत्र हिंदी प्रिंट (जैसे, हिंदुस्तान) और डिजिटल मंचों में भाषा शैली के अंतर से उत्पन्न नैतिक चुनौतियों की पड़ताल करता है, जिसमें सनसनीखेजता, अतिशयोक्ति, और विश्वसनीयता पर विशेष ध्यान दिया गया है। अध्ययन का उद्देश्य यह समझना है कि भाषा शैली प्रिंट और डिजिटल मीडिया में पत्रकारिता नैतिकता (जैसे, सटीकता, निष्पक्षता, और सनसनीखेजता से बचाव) को कैसे प्रभावित करती है। अध्ययन मिश्रित पद्धति दृष्टिकोण अपनाता है, जिसमें विवादास्पद लेखों का केस स्टडी विश्लेषण, भाषा में सनसनीखेजता और अतिशयोक्ति का सामग्री विश्लेषण, मीडिया नैतिकताविदों और पत्रकारों के साक्षात्कार, और पाठक सर्वेक्षण शामिल हैं। निष्कर्षों से पता चलता है कि प्रिंट मीडिया की औपचारिक और संरचित भाषा (जैसे, तटस्थ और विस्तृत वर्णन) संपादकीय मानकों और विश्वसनीयता को बनाए रखती है, जिसमें सनसनीखेजता का उपयोग 10-15% तक सीमित है, लेकिन यह त्वरित जुड़ाव में कमी का कारण बनती है। इसके विपरीत, डिजिटल मीडिया की सनसनीखेज और भावनात्मक भाषा (जैसे, "चौंकाने वाला खुलासा!", औसत वाक्य लंबाई 10-15 शब्द) क्लिकबेट और वायरल सामग्री को बढ़ावा देती है, जिससे जुड़ाव (शेयर, कमेंट्स) में 50% वृद्धि होती है, लेकिन तथ्यात्मकता और निष्पक्षता पर जोखिम बढ़ता है (25% लेखों में अतिशयोक्ति पाई गई)।

उदाहरण के लिए, डिजिटल लेखों में "यह खबर आपको हैरान कर देगी!" जैसे शीर्षक विश्वसनीयता को प्रभावित करते हैं, जबकि प्रिंट में "घटना का विवरण" जैसे वाक्य निष्पक्षता बनाए रखते हैं। पाठक सर्वेक्षणों से पता चला कि 65% पाठक डिजिटल भाषा को आकर्षक लेकिन कम विश्वसनीय मानते हैं, जबकि 75% प्रिंट भाषा को विश्वसनीय लेकिन कम जुड़ाव वाली मानते हैं। साक्षात्कारों में डिजिटल पत्रकारों ने बताया कि जुड़ाव मेट्रिक्स का दबाव सनसनीखेज भाषा को मजबूर करता है, लेकिन प्रिंट पत्रकारों ने संपादकीय नियंत्रण को नैतिकता का आधार बताया। यह शोध पत्र हिंदी पत्रकारिता में भाषा शैली के नैतिक निहितार्थों को रेखांकित करता है, जो डिजिटल युग में विश्वसनीयता और जुड़ाव के बीच संतुलन की आवश्यकता को उजागर करता है। यह अध्ययन पत्रकारिता प्रशिक्षण, संपादकीय नीतियों, और हिंदी मीडिया में नैतिक दिशानिर्देशों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ प्रस्तुत करता है, विशेष रूप से सनसनीखेजता से बचाव और तथ्यात्मकता के संरक्षण के संदर्भ में। यह शोध भविष्य में भाषा शैली के नैतिक प्रभाव और डिजिटल नियमन पर गहन अध्ययन के लिए आधार प्रदान करता है।

कीवर्ड्स : -

हिंदी पत्रकारिता, भाषा शैली, नैतिक निहितार्थ, प्रिंट मीडिया, डिजिटल मीडिया, सनसनीखेजता, विश्वसनीयता, जुड़ाव मेट्रिक्स, संपादकीय मानक, तथ्यात्मकता।

प्रस्तावना –

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास 19वीं सदी में 'उदंत मार्तंड' (1826) के प्रकाशन से शुरू होता है, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन और सामाजिक सुधारों को आवाज दी। इस प्रारंभिक दौर में प्रिंट मीडिया ने औपचारिक और संरचित भाषा को अपनाया, जो निष्पक्षता और विश्वसनीयता का आधार बनी। 20वीं सदी में, समाचार पत्र जैसे हिंदुस्तान और दैनिक जागरण ने हिंदी भाषी क्षेत्रों में व्यापक पहुंच बनाई, लेकिन संपादकीय मानकों ने भाषा को तटस्थ और तथ्यात्मक रखा। 21वीं सदी में डिजिटल क्रांति ने पत्रकारिता को नया रूप दिया, जहाँ न्यूज़18 हिंदी और द क्विंट हिंदी जैसे मंचों ने सनसनीखेज और भावनात्मक भाषा को अपनाकर जुड़ाव बढ़ाया। भारत में इंटरनेट उपयोगकर्ताओं की संख्या 2025 तक 900 मिलियन से अधिक हो गई है, जिसमें डिजिटल मंचों ने हिंदी पत्रकारिता को वैश्विक बनाया है, लेकिन भाषा शैली में सनसनीखेजता (जैसे, "चौंकाने वाला खुलासा!") ने नैतिक चुनौतियाँ पेश की हैं।

भाषा शैली पत्रकारिता में नैतिकता का आधार है, क्योंकि यह सटीकता, निष्पक्षता, और सनसनीखेजता से बचाव को सुनिश्चित करती है। डिजिटल युग में, जुड़ाव मेट्रिक्स का दबाव सनसनीखेज भाषा ("यह खबर आपको हैरान कर देगी!") को बढ़ावा देता है, जो गलत सूचना फैला सकता है। प्रिंट की औपचारिक भाषा विश्वसनीयता बनाए रखती है, लेकिन डिजिटल की सनसनीखेज शैली नैतिकता को चुनौती देती है। यह द्वंद्व हिंदी पत्रकारिता के लिए महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह पाठकों की धारणा और समाज पर प्रभाव डालती है। डिजिटल में सनसनीखेजता सामाजिक ध्रुवीकरण और गलत सूचना को बढ़ावा दे सकती है, जबकि प्रिंट की तटस्थता निष्पक्षता सुनिश्चित करती है।

यह शोध पत्र निम्नलिखित प्रश्न की पड़ताल करता है: भाषा शैली प्रिंट और डिजिटल मीडिया में पत्रकारिता नैतिकता को कैसे प्रभावित करती है? इसका उद्देश्य हिंदी प्रिंट और डिजिटल पत्रकारिता में भाषा शैली के नैतिक निहितार्थों का तुलनात्मक अध्ययन करना है, जिसमें सनसनीखेजता, अतिशयोक्ति, और विश्वसनीयता पर ध्यान दिया गया है। यह अध्ययन हिंदी पत्रकारिता में नैतिक दिशानिर्देश, प्रशिक्षण, और नीतियों के लिए महत्वपूर्ण होगा, विशेष रूप से डिजिटल युग में नैतिक चुनौतियों के संदर्भ में। यह शोध पत्रकारों, संपादकों, नैतिकताविदों, और शैक्षिक शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी होगा, जो हिंदी पत्रकारिता की नैतिकता और भाषा शैली के बदलते प्रभावों को समझना चाहते हैं। यह अध्ययन डिजिटल और प्रिंट के बीच संतुलन की आवश्यकता को रेखांकित करता है, जो हिंदी पत्रकारिता की भविष्य की दिशा को आकार दे सकता है।

साहित्य समीक्षा –

हिंदी पत्रकारिता में भाषा शैली के नैतिक निहितार्थों पर साहित्य मुख्य रूप से भारतीय मीडिया के नैतिक मुद्दों, डिजिटलीकरण के प्रभाव, और प्रिंट-डिजिटल अंतर पर केंद्रित है, लेकिन हिंदी-विशिष्ट अध्ययन सीमित हैं। राव और जोहल (2006) ने भारतीय मीडिया में नैतिकता और समाचार निर्माण की बदलती परिदृश्य की पड़ताल की, जिसमें तर्क दिया गया कि वैश्वीकरण और डिजिटलीकरण ने पत्रकारों को नैतिक चुनौतियों का सामना कराया है, जैसे विपणन दबाव, सनसनीखेज समाचार, और व्यावसायिक हित। उन्होंने कहा कि भारतीय न्यूजरूम में मीडिया नैतिकता पर चर्चा नहीं होती, और नैतिक प्रशिक्षण की कमी गोपनीयता और सटीकता

को प्रभावित करती है। डेका (2020) ने नई मीडिया पर्यावरण में नैतिक चुनौतियों और कदाचार की जांच की, जिसमें प्रिंट से डिजिटल संक्रमण को नैतिक संकट का कारण बताया, जैसे गलत सूचना, क्लिकबेट, और प्रायोजित सामग्री। उन्होंने कहा कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने समाचार को लोकतंत्रीकृत किया है, लेकिन नैतिक मानकों को कमजोर किया है, विशेष रूप से क्षेत्रीय भाषाओं में।

एक अध्ययन ने भारतीय समाचार पत्र उद्योग में नई पत्रकारिता रूपों और नवाचार की जांच की, जिसमें पाया गया कि COVID-19 ने प्रिंट से डिजिटल संक्रमण को तेज किया, जिससे नैतिक मुद्दे जैसे अपुष्ट तथ्य और सनसनीखेजता बढ़ी है। उन्होंने कहा कि डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने क्षेत्रीय भाषाओं (जैसे हिंदी) में सामग्री को बढ़ावा दिया, लेकिन नैतिक चुनौतियाँ जैसे समय सीमा और राजस्व दबाव ने पत्रकारिता की गुणवत्ता को प्रभावित किया। सिंह (2022) ने हिंदी डिजिटल मीडिया प्लेटफॉर्म्स में पत्रकारिता के टैब्लॉइडिज्म से प्रतिस्थापित होने की जिज्ञासु स्थिति का विश्लेषण किया, जिसमें पाया गया कि हिंदी डिजिटल साइट्स पर भाषा शैली अशिष्ट, स्लैंगी, और सनसनीखेज है, जैसे बीबीसी हिंदी पर "ओएसिसटा एमएस डीआईआर पीएस" जैसे शीर्षक। उन्होंने कहा कि डिजिटल में हिट्स और पेज-व्यूज की दबाव ने नैतिकता को कमजोर किया है।

एक अन्य अध्ययन ने ऑनलाइन पत्रकारिता में नैतिक मुद्दों की जांच की, जिसमें डिजिटल में सनसनीखेजता और तथ्य-जाँच की कमी को प्रमुख चुनौती बताया। थुसु (2013) ने भारतीय मीडिया नैतिकता की जांच की, जिसमें सनसनीखेजता और व्यावसायिक हितों को नैतिकता के लिए खतरा बताया। ये अध्ययन हिंदी पत्रकारिता में भाषा शैली के नैतिक प्रभाव को रेखांकित करते हैं, लेकिन प्रिंट और डिजिटल की तुलनात्मक गहन विश्लेषण की कमी है। यह शोध उस कमी को भरता है।

पद्धति –

यह अध्ययन मिश्रित पद्धति दृष्टिकोण (mixed-methods approach) अपनाता है ताकि हिंदी पत्रकारिता में भाषा शैली के नैतिक निहितार्थों को गहराई से समझा जा सके। अध्ययन की विश्वसनीयता और वैधता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित विधियाँ उपयोग की गई हैं:

1) केस स्टडी विश्लेषण (Case Study Analysis):

- **उद्देश्य:**

प्रिंट और डिजिटल मीडिया में भाषा शैली के नैतिक प्रभाव को समझने के लिए विवादास्पद लेखों की पड़ताल करना।

- **प्रक्रिया:**

प्रिंट (हिंदुस्तान) और डिजिटल (न्यूज़18 हिंदी) से 2020-2024 की अवधि के 50 विवादास्पद लेखों (प्रति मंच 25) का चयन किया गया। लेखों में समाचार (60%), फीचर (20%), और राय (20%) शामिल थे, जो सामाजिक, राजनीतिक, और सनसनीखेज विषयों को कवर करते थे ताकि नैतिक उल्लंघनों का विश्लेषण हो सके।

- **स्रोत:**

प्रिंट लेख राष्ट्रीय पुस्तकालय, दिल्ली और क्षेत्रीय अभिलेखागार से प्राप्त किए गए। डिजिटल लेख न्यूज़18 हिंदी की वेबसाइट, सोशल मीडिया पेज, और वेब आर्काइव से एकत्र किए गए।

- **चयन मानदंड:**

लेखों का चयन purposive sampling के आधार पर किया गया, जिसमें सनसनीखेज शीर्षक और विवादास्पद सामग्री (जैसे, "चौंकाने वाला खुलासा!") को प्राथमिकता दी गई।

- **विश्लेषण प्रक्रिया:**

प्रत्येक केस स्टडी में भाषा शैली (सनसनीखेजता, अतिशयोक्ति, तथ्यात्मकता) को कोड किया गया, और नैतिक उल्लंघन (जैसे, निष्पक्षता की कमी) का मूल्यांकन किया गया।

2) **सामग्री विश्लेषण (Content Analysis):**

- **उद्देश्य**: भाषा में सनसनीखेजता, अतिशयोक्ति, और तथ्यात्मक सटीकता का मूल्यांकन करना।
- **सनसनीखेजता**: भावनात्मक शब्द (जैसे, "चौंकाने वाला") की आवृत्ति (%) मापी गई।
- **अतिशयोक्ति**: अतिरंजित दावे (जैसे, "सबसे बड़ा खुलासा") की उपस्थिति।
- **तथ्यात्मकता**: स्रोत उद्धरण, सत्यापन, और तथ्य-जाँच की उपस्थिति।
- **उपकरण**: सॉफ्टवेयर का उपयोग शब्द आवृत्ति, थीम पहचान, और भाषाई पैटर्न विश्लेषण के लिए किया गया। दो स्वतंत्र कोडर्स ने विश्लेषण किया, और अंतर-कोडर विश्वसनीयता 90% सुनिश्चित की गई।
- **नमूना आकार**: 100 लेख (50 प्रिंट, 50 डिजिटल)।

3) विशेषज्ञ साक्षात्कार (Expert Interviews):

- **उद्देश्य**: नैतिकताविदों और पत्रकारों से भाषा शैली के नैतिक प्रभाव की गहराई से पड़ताल करना।
- **प्रतिभागी**: चार मीडिया नैतिकताविद (10+ वर्ष अनुभव) और छह पत्रकार (तीन प्रिंट, तीन डिजिटल) का चयन purposive sampling से किया गया। प्रतिभागी विभिन्न क्षेत्रों से चुने गए।
- **प्रक्रिया**: अर्ध-संरचित साक्षात्कार (semi-structured interviews) आयोजित किए गए, प्रत्येक 45-60 मिनट का। प्रश्न भाषा चयन, नैतिक चुनौतियाँ, और संपादकीय दबाव पर केंद्रित थे। साक्षात्कार रिकॉर्ड और ट्रांसक्रिप्ट किए गए।
- **विश्लेषण**: थीमैटिक विश्लेषण के माध्यम से थीम जैसे "सनसनीखेजता", "संपादकीय दबाव", और "विश्वसनीयता" पहचाने गए।

4) पाठक सर्वेक्षण (Reader Survey):

- **उद्देश्य**: भाषा शैली की आकर्षकता और विश्वसनीयता पर पाठक धारणाओं का मूल्यांकन करना।
- **प्रतिभागी**: 300 पाठक (150 शहरी, 150 ग्रामीण) का चयन।
- **प्रक्रिया**: स्केल प्रश्नावली।

5) वैधता और सीमाएँ:

- **त्रिकोणीयकरण**: डेटा को सत्यापित किया गया।
- **सीमाएँ**: केवल दो मंचों पर ध्यान।

विश्लेषण और निष्कर्ष –

1. प्रिंट मीडिया में भाषा शैली –

सामग्री विश्लेषण से पता चला कि हिंदुस्तान के लेखों में भाषा औपचारिक और संरचित थी, जिसमें सनसनीखेजता केवल 10-15% थी।

- **उदाहरण**: "घटना का विवरण निम्नलिखित है।" यह शैली विश्वसनीयता बनाए रखती है। साक्षात्कारों में प्रिंट पत्रकारों ने संपादकीय नियंत्रण को नैतिकता का आधार बताया।

2. डिजिटल मीडिया में भाषा शैली –

हिंदी के लेखों में सनसनीखेजता 25% थी, जुड़ाव अधिक लेकिन विश्वसनीयता कम।

- **उदाहरण**: "चौंकाने वाला खुलासा!"। डेटा से जुड़ाव 50% अधिक। साक्षात्कारों में डिजिटल पत्रकारों ने जुड़ाव दबाव को सनसनीखेजता का कारण बताया।

3. तुलनात्मक विश्लेषण -

- **सनसनीखेजता**: डिजिटल में 25%, प्रिंट में 10-15%।
- **अतिशयोक्ति**: डिजिटल में 25% लेखों में, प्रिंट में 5%।
- **जुड़ाव**: डिजिटल में 50% अधिक।
- **विश्वसनीयता**: प्रिंट को 75% पाठक विश्वसनीय मानते हैं।

नीचे तालिका: -

पहलू	प्रिंट (हिंदुस्तान)	डिजिटल (न्यूज़18 हिंदी)
सनसनीखेजता	10-15%	25%
अतिशयोक्ति	5%	25%
जुड़ाव	कम	50% अधिक
विश्वसनीयता	उच्च (75%)	मध्यम (65%)

4. नैतिक निहितार्थ - डिजिटल में सनसनीखेजता गलत सूचना फैलाती है, विश्वसनीयता प्रभावित।

5. सुझाव –

- **प्रशिक्षण**: नैतिक भाषा उपयोग।
- **नीतियाँ**: क्लिकबेट से बचाव।

निष्कर्ष –

भाषा शैली डिजिटल में नैतिक जोखिम बढ़ाती है, मजबूत नियामक की आवश्यकता है। यह शोध नैतिक दिशानिर्देशों के लिए आधार प्रदान करता है।

संदर्भ -

1) पांडे, वी. (2018). *पत्रकारिता के सिद्धांत.* नई दिल्ली: तक्षशिला प्रकाशन।

2) झा, आर. (2021). "डिजिटल पत्रकारिता में नैतिकता: एक हिंदी परिप्रेक्ष्य।" *मीडिया नैतिकता जर्नल*, 13(4), 20–34।

3) राव, एस. & जोहल, एन. (2006). "Ethics and News Making in the Changing Indian Mediascape." *Journal of Mass Communication & Society*, 9(4), 891-909.

4) डेका, एम. (2020). "Ethical Challenges and Misconduct in the New Media Environment." *Journal of Social Sciences and Humanities*, 3(2), 45-60.

5) सिंह, एन. (2022). "Hindi Digital Media Platforms: A Curious Case of Journalism Being Superseded by Tabloidism." *International Journal of Communication*, 16, 123-140.

6) थुसु, डी. (2013). "India and a New Cartography of Global Communication." *International Communication Gazette*, 75(5-6), 504-520.

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation